ओ३म

वेदाङ्ग

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी - प्रचार विभाग

Arya Pratinidhi Sabha Fiji
P.O. Box 4245, Samabula

APRIL - JUNE ISSUE 1997
No. 13

संस्कार

पिछले अंक से आगे

मनुष्य के शरीर और आत्मा को उत्तम बनाने के लिए अर्थात् गर्भाधान से लेके श्मशान तक अर्थात् मृत्यु के पश्चात् मृतक शरीर का विधि पूर्वक अन्त्येष्टि कर्म करने तक सोलह संस्कार करने का विधान है। इन में शरीर का आरम्भ गर्भधान से होकर शरीर का अन्त भस्म कर देने अर्थात् अग्नि में जला देने तक सोलह प्रकार के उत्तम संस्कार करने होते है उन में से सब से प्रथम गर्भाधान संस्कार है।

गर्भ का धारण अर्थात् वीर्य का गर्भाशय में स्थापन करना उसे गर्भाधान कहते है। जैसे बीज और भूमि के उत्तम होने से अन्न आदि पदार्थ उत्तम होते है वैसे ही बलवान स्त्री –पुरुष से सन्तान भी उत्तम होते है। इसलिए स्त्री–पुरुष को आवश्यक है कि गर्भस्थापन से पहले पूर्ण युवा अवस्था तक ब्रह्मचर्य का और विद्या अभ्यास कर लेना चाहिए।

गर्भाधान का समय

गर्भाधान करने से पूर्व कन्या की आयु कम–से–कम सोलह वर्ष और पुरुष की आयु पच्चीस वर्ष की अवश्य होनी चाहिए। इस से अधिक आयु होने पर और अधिक उत्तम होती है। क्योंकि कन्या की आयु सोलह वर्ष पूरी होने से पहले उसके गर्भाशय में बालक के शरीर के यथावत् बढ़ने और उसके धारण–पोषण करने का सामर्थ्य नहीं होता और बिना पच्चीस वर्ष पूर्ण किये पुरुष का वीर्य भी उत्तम नहीं होता। सोलह वर्ष से कम आयु की स्त्री में पच्चीस वर्ष की आयु से कम आयु का पुरुष यदि गर्भाधान करता है तो वह गर्भ उदर में ही बिगड़ सकता है। अगर उत्पन्न हुआ भी तो अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकता और अगर जीता भी रहा तो उसका अत्यन्त कमजोर शरीर रोगी और दुर्बल इन्द्रिय वाला होगा। इसलिए अत्यन्त बाला अर्थात् सोलह वर्ष की आयु से कम अवस्था वाली स्त्री में कभी गर्भाधान नहीं करना चाहिए।

विवाह का मुख्य उद्देश्य है पुरुष–स्त्री दोनों मित्र समान बर्तते हुए उत्तम सन्तान उत्पन्न करना। इस नियम को ध्यान में रख के ही अन्य विषयों पर विचार किया गया है। दम्पती व्रत को विवाह पर इसलिए महान कहा गया है कि दम्पती व्रत को धारण करने वाले पति–पत्नी मित्रभाव से रहते हुए उत्तम सन्तान उत्पन्न करके उत्तम रीति से उसका पालन–पोषण कर सकते है। अपनी इच्छा अनुसार विवाह करने वालों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम ने विवाह श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न करने के लिए किया है। इस सम्बन्ध में अलग–अलग विचार रखने वालों को विवाह नहीं करना चाहिए। दोनों के विचारों में भेद होने से उत्तम सन्तान प्राप्त करना असम्भव है। इन दोनों मित्रों के गुण कर्म स्वाभाव एक जैसा और उत्तम सन्तान उत्पन्न करने की योग्यता वाले हो तब दोनों परम मित्र बनकर उत्तम सन्तान उत्पन्न कर सकते है जो विवाह का मुख्य उद्देश्य है। विवाह करने वाले स्त्री–पुरुष दोनों एक दूसरे के परम मित्र है। यह बताना तथा उत्तम

सन्तान उत्पन्न करना इस विधि का ज्ञान कराना ही गर्भाधान संस्कार का काम है। यह हमें कभी भूलना नहीं चाहिए।

दूसरी बात यह है कि गर्भाधान करने से पूर्व ही स्त्री–पुरुष को इसकी मुख्य तैयारी करनी चाहिए। इसी संस्कार का दूसरा नाम पुत्रेष्टि–यज्ञ भी है। आदि सृष्टि से लेकर महाभारत तक संसार भर के सभी मनुष्य इसी रीति से सन्तान उत्पन्न किया करते थे। किन्तु इस समय विश्व के किसी भाग का रहने वाला मनुष्य सन्तान उत्पन्न करने के लिए कोई तैयारी नहीं करता। इसी कारण मनुष्य की स्थिति बिगड़ती जा रही है। एक बात अवश्य देखने तथा पढ़ने में आई है कि अब पश्चिमी देशों के कई बड़े–बड़े विद्वान् इस संस्कार की आवश्यकता का अनुभव करने लगे है। परन्तु अभी तक पूर्ण विधि का ज्ञान उनको भी नहीं हो पाया है अथवा वे अभी नहीं समझ सके है।

गर्भाधान संस्कार से पहले माता–पिता के विचार तथा कर्त्तव्य उच्च कोटी के होने चाहिए। माता–पिता को परस्पर प्रेम करते हुए समय अनुसार उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के उपायों को अपनाने चाहिए। यदि इन में शारीरिक अथवा मानसिक कमजोरिया है तो उन को दूर करके उनके स्थान में पवित्र भाव उत्पन्न कर लने चाहिए। इस प्रकार की तैयारी करते हुए कमजोर माता–पिता अपनी कमियों को सन्तान में प्रवेश होने से रोक सकते है।

वेद मन्त्र का उपदेश है कि स्त्री–पुरुष पौष्टिक भोजन करने और पुष्टिकारक औषधियों के उचित सेवन करने से दानों के शरीरों में बल की वृद्धि होती है। वेद मन्त्र के आधार पर ही पूर्व ऋषियों ने आयुर्वेद शास्त्र, उपनिषदों में तथा महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि नामक ग्रन्थ में पुष्टिकारक औषधि तथा अच्छे प्रकार का सात्विक भोजन करने का विधान किया है। अन्त में गहस्थों को आदेश दिया है कि जैसे भोजन आदि पदार्थों द्वारा वृद्धजनों को सन्तुष्ट करते है उसी प्रकार उत्तम सन्तान उत्पन्न करके उन्हे भी सन्तुष्ट करे।

इन सब बातों से सिद्ध होता है कि सुसन्तान उत्पन्न करना